कृत्सां लच्चगायाः।

| अचलप्रति: | हिगुणितवसुलञ्जभिरचलप्रतिरिष्ट ।।।।।।।।। |
|--|--|
| | AND THE RESERVE OF THE PARTY OF |
| गर्ड्स्तम् | गरद्वतं नजी भजतमा यदा खुसदा |
| a statistic ten france | 111,121,211,121,221,3 |
| color testes to colory | Party Inches of State at |
| धीरललिता | संकथिता भरी नरनगाच धीरललिता |
| | 2,111,515,111,5 |
| चनगति: | पचभकारयुताव्यमतिर्येदि चान्वगुरुः गा,गा,गा,गा,गा,ग |
| मिक्किक्वनता | नजरभभेन गेन च खान्मखिकच्यनता।।।।,।७।,७।७,७।।,७॥,७ |
| रूपम् | यसिन् सर्वे गा राजनी त्रसादं तह्यं नाम |
| वर्युवति: | ०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,०,० भो रयना नगौ च यस्यां वरयुवतिरियम् |
| | 211,111,111,111,111,7 |
| सप्तर्माचरा हति:। व्यविहः। | THE RESERVENCES, STATES |
| प्रिस्वरिकी वर्डे एकाइप्रे च यति:। | रचेबदिश्विता यमनसभवा गः श्रिखरियो |
| AND LINE THE | THE PARTY OF THE P |
| पृथ्वी | जसी जस्यला वस्यष्टयतिच एच्वी गुद: |
| ष्यरमे नवमे च यति:। | 121,112,121,131,132,1,3 |
| | Marin Town or the control of |
| वंग्रमचयतितम् वंग्रदलमिति ग्रम्भी वंग्रमचयतिता | दिङ्सुनि वंग्र्यचपतितं भरनभनतारीः । ।।।,२॥,।।।,२ |
| इति केचित्। अस्य दश्मे सप्तमे | THE STATE OF THE PARTY OF THE P |
| च यतिः। मन्दाकानना | मन्दाकान्तामुधिरसनगैमीं भनी तौ गयुम्मम् |
| चखाचतुर्धे वह सप्तमे च यति:। इयं दौत्यवर्धनीपयोगिनी भूसा। | 2,5,155,155,111,115,555 |
| THE PARTY MADE IN | नसमर्सना गः वड्वेदेडेयेडेरियी मता |
| इरिया यह चतुर्थे सप्तमे च यति:। | ।।।,।।७,३७७,७।७,।।३,।,७ |
| a described neglector | ATT CHARLES |
| नद्देवसम् | यदि भवती नजी भजजता गुर नईटकम् |
| | 111,101,101,101,10,1,0 |
| कोकिजकम | इयऋतुसागरेथेतियुतं यदि कोविजकम् |
| ना(नाजनान् | 111 121 211 121 121 12 |

5,1,151,151,115,151,111

छन्दर्भ हत्तिनामानि।

पाखा सप्तमे वही चतुर्थे च यति:।

तरिखदुहिलतटविच्यत्यवस्तिदमरसुनिसुखननविहितप्रतिरिह ।
मधुरिपुरिभनवनन्धर्यचितनुदचनप्रतिबद्यति सुलतिहृदि खन्नु ॥
आमरमयूरमानससुदे पयोद्धनिगाँबङ्बत सुरारिसुनगेन्सकासने ।
धरिखभरावतारविधिहिक्सिम्हम्यः
स नयति कंसरङ्भवि सिंहनादो हरे: ॥

inford.

POHIEFE

वकारमाज्या योगः। भोतः।

क्षिण के सुरक्ष के सुकत

OF STREET, ST. ST. ST.

HAN BEET BEKER

WE IN COURSE TWO IS

PRINTER WHITE

वास्तानित है। इस्ता

छ्न्दसासुदाच्रणानि।

करादस्य अरे नतु शिखरियी द्रश्वति शिशी-विकीना: सा: सत्यं नियतमवधेयं तद्खिली:। इति चस्यहोपान्नचितनिस्तालापजनितं सितं विश्वद्वी जगदवतु गीवह नघर: ॥ दुरनादनुजेयरप्रकरदु:स्पष्टव्यीभरं जहार निजलीलया यदुक्रके वतीर्थायु यः। स एव जगतीगतिद्रितभारभसाहभा हरियति हरि: सुतिसारणचादुभिस्तोषित: ॥ नृतनवंश्रपचयतितं रजनिजललवं पश्य सञ्जन्द ! मौत्तिकमिवीत्तममरकतगम्। रव च तं चकोरनिकर; प्रपिवति सुदितो वान्तमवेत्य चन्द्रकिर्शेरस्तक्यमिव॥ प्रमालाप: प्रियवितर्थ: प्रीखितालिङ्गारी-मन्दाकान्ता तर्तु नियतं वस्यतामेति वाला। रवं भिचावचनसुधया राधिकाया: सखीनां श्रीतः पायात् स्मितसुवदनो देवकीनन्दनो नः ॥ यधित स विधिने चं नीला घुवं हरिसीमसाद्-व्रजन्दगृहणां सन्दोहस्योत्तसव्रयम् । यदयमित्रां द्वासामे सुरारिक वेवरे विकारदिधकं बहाकाङ्के विलोलविलोचनम् ॥ व्रजविता वसन्तलतिका विलसमाधुपं मधुमयनं प्रयम्जनवाञ्चितंकत्वातरम्। विसमिभनौति कोश्प सुकती सुहितेन चुदा कचिरपदावलीघटितनईटकेन कवि: ॥ तसदर्येच्यां मधुरभाषयमीद्वरं मधुसमयागमे सर्यकेलिभिरहसितम्। चालिजजितस्ति रविस्तावनकोकिलकं नतु कलयामि तं विख ! यदा द्वृदि नन्दस्तम् ॥